द्वीपीय कृषि

भा. कृ. अनु. - के. द्वी कृ. अनु. स. समाचार पत्रिका

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान
ICAR-CENTRAL ISLAND AGRICULTURAL RESEARCH INSTITUTE
(IS/ISO 9001:2008 certified)
पोस्ट बॉक्स नं. 181, पोर्ट ब्लेयर - 744 101
Post Box No. 181, Port Blair - 744 101
अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, भारत
Andaman and Nicobar Islands, India

भाग. IX. संख्या. 1 & 2

अप्रैल 2016 - मार्च 2017

38वां स्थापना दिवस का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (कैरी) ने अपना 38वां स्थापना दिवस दिनांक 23 जून, 2016 को मनाया। डॉ. एस. दाम रॉय, निदेशक, आई.सी.ए.आर–सी.आई.ए.आर.आई ने सभा सदस्यों का स्वागत किया एवं जंगलों की सफाई से बने इस उत्कृष्ट केन्द्र एवं सी.ए.आर.आई से सी.आई.ए.आर.आई बनने तक के विभिन्न पड़ावों का उल्लेख किया, जो अब दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों में उष्णकटिबंधीय द्वीपों के कृषि क्षेत्र में प्रकाशस्तम्भ बन चुका है। अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने अपने पूर्ववर्ती निदेशकों की प्रशंसा की एवं संस्थान के वैज्ञानिकों के उस योगदान पर प्रकाश डाला जिसके तहत उच्च प्रभाव कारक एन.ए.ए.एस. मानक वाले वैज्ञानिक साहित्य का प्रकाशन सम्भव हुआ, जिससे संस्थान भा.कृ.अनु.प. के 96 संस्थानों में से चौथे पायदान पर पहुंच गया है। उन्होंने लाइन डिपार्टमेंटों से समन्वयन को उच्च श्रेणी में रखा जिनके माध्यम से हम इन द्वीप समूहों के दूरस्थ जगहों तक पहुच सके और द्वीप के किसानों, महिलाओं, युवा, एवं अन्य पणधारियों को वर्षों से लाभन्वित कर सके।

मुख्य अतिथि श्रीमती आर. मेनका, भा.प्र.से., सचिव (कृषि, पशुपालन, पशु चिकित्सा एवं मात्स्यिकी) ने अपने सम्बोधन में संस्थान द्वारा अनुसंधान, विकास एवं विस्तार सेवाओं के क्षेत्र में किए गए सेवाओं और संस्थान को इस स्तर तक पहुंचाने हेतु वैज्ञानिकों एवं अन्य के योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने, संस्थान द्वारा अंडमान एवं निकोबार प्रशासन को सभी वांछित मंचों पर दी गई सहायता हेतु अपनी प्रसन्नता व्यक्त की एवं कैरी द्वारा पोर्ट ब्लेयर में काम्पोजिट बायो–सेक्यूरिटी प्रयोगशाला की स्थापना में सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने, कैरी के चावल बीजों को किसानों द्वारा अपनाने तथा प्रशासन के मृदा स्वास्थ्य कार्ड तथा अन्य कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के कार्य को सराहा, जो भारत की मुख्य भूमि के कई राज्यों की तुलना में द्वीप का एक प्रगतिशील कार्य है। उन्होंने किसानों, युवाओं, विस्तार लाभार्थियों के हित में बुलेटिनों एवं फोल्डोरों का विमोचन किया और अंडमान साइंस एसोशिएशन का वेबसाइट प्रारम्भं किया।

डॉ. शिबनारायण दाम रॉय
निदेशक, सीआईएआरआई को एफ.एन.ए.ए.एस सम्मान

डॉ. शिबनारायण दाम रॉय, निदेशक, भा.कृ.अनु.प. केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर को 01 जनवरी, 2017 में **प्रतिष्ठित नेशनल अकेडमी ऑफ एग्रिकल्चरल साइंसेस का फेलोशिप** प्रदान किया गया। यह फेलोशिप मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र में मत्स्य संसाधन प्रबंधन एवं जलजीव पालन में विशेषज्ञता के लिए दिया जाता है। एन.ए.ए.एस. (1990) के प्रारंभ से अब तक चयनित 30 सदस्यों के विद्वत समाज में डॉ. एस. दाम रॉय भी सम्मिलित हैं।

डॉ. सी. रघुनाथन, प्रभारी अधिकारी, जेड.एस.आई, पोर्ट ब्लेयर ने ''भारत की तटीय एवं समुद्री जैवविविधता'' विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया, जो अत्यंत सूचनाप्रद एवं सोच उत्तेजक व्याख्यान था जिसे उच्च पदाधिकारियों एवं प्रतिभागियों ने सराहना की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा वैज्ञानिकों, कार्मिकों तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों को उनके मेधावी योगदान और सराहनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। इस समारोह में विकासात्मक विभागों, अनुसंधान, मीडिया तथा कार्मिकों का विशाल समूह उपस्थित था।

स्वच्छ भारत अभियान पखवाड़ा का आयोजन

स्वच्छ भारत अभियान पखवाड़ा का प्रारम्भ 02 अक्टूबर, 2016 को कार्मिकों द्वारा शपथ ग्रहण के पश्चात परिसर के आस पास के क्षेत्र में सफाई कार्य से प्रारम्भ हुआ। पोर्ट ब्लेयर नगर पालिका परिषद के सहयोग से दिनांक 17 अक्टूबर, 2016 को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर जागृति कार्यक्रम–सह–प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. एस. दाम रॉय ने स्वच्छ भारत अभियान के प्रसंग के महत्व का उल्लेख किया, जिसका चयन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने किया। उन्होंने बदलते जलवायुवीय परिवेश में कृषि के महत्व पर जोर दिया और सभी से आग्रह किया कि किसी भी खाद्य पदार्थ को नष्ट न करें और क्षति कम करने, पुनरोपयोग करने तथा रिसाइकल सिंद्धात को अपनाएं। श्री विजय कुमार, सीनियर सैनीटरी इंस्पेक्टर, पोर्ट ब्लेयर नगर पालिका परिषद ने व्यापक रूप से यह प्रतिपादित किया कि किस प्रकार घरेलू अपशिष्टों को सूखे एवं गीले अपशिष्टों में छांटा जा सकता है।

चौलदारी ग्राम पंचायत के बचरा पहाड़ गांव में दिनांक 21 अक्टूबर 2016 को स्वच्छ/हरित खेती के प्रति एक जागृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. एस. दाम रॉय कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे जब कि श्री मोहन हल्दार, प्रधान, चौलदारी पंचायत तथा श्री असीम बैद्या, उप–प्रधान, सम्माननीय अतिथि रहें। कार्यक्रम में श्री मजुमदार, सरपंच, कैरी तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं किसान उपस्थित हुए। डॉ. एस. दाम रॉय ने सूचित किया कि स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत विभिन्नि गतिविधियों के लिए बचरा पहाड़ गांव को अपनाया गया। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि कृषि अपशिष्टों को कम्पोस्ट में बदल कर हरित खेती की परिकल्पना को अपनाएं। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत बचरा पहाड़ गांव को अपनाने के लिए किए गए अनुरोध को स्वीकार करने हेतु श्री मोहन हल्दार, प्रधान ने कैरी को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर एक खेल के मैदान के बाउंड्री के निकट प्रतिभागियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर में 31 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2016 के दौरान ''सत्यनिष्ठा प्रोत्साहित करने एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन में सार्वजनिक भागीदारी'' प्रसंग के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन यथोचित रूप से किया गया। सप्ताह का प्रारम्भ 31 अक्टूबर, 2016 को शपथ ग्रहण समारोह से प्रारम्भ हुआ, तत्पश्चात निबन्ध लेखन, ''भ्रष्टाचार उन्मूलन – राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका'' प्रसंग पर वाद विवाद, संस्थान के कार्मिकों एवं पोर्ट ब्लेयर के विभिन्न स्कूलों और कालेजों के छात्रों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

श्री महेश कुमार गुप्ता, ए.डी.एम एवं सहायक आयुक्त, दक्षिणी अंडमान ने कैरी , पोर्ट ब्लेयर के कांफ्रेंस हाल में दिनांक 04 नवम्बर, 2016 को ''सत्यनिष्ठा प्रोत्साहित करने तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन में सार्वजनिक भागीदारी'' प्रसंग पर अतिथि व्याख्यान दिया।

सतर्कता जागरुकता सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन 05 नवम्बर, 2016 के दौरान किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. एस. दाम राय, निदेशक, कैरी ने छात्रों को सेमिनार में भाग लेने हेतु तथा उनके साथ आए अध्यापकों की प्रशंसा की। उन्होंने मनोबल, नैतिकता तथा ईमानदारी पर बल दिया जो नागरिकों को सतर्क बनाए रखेगा। उन्हों ने विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र भी दिए ।

कैरी द्वारा कृषि शिक्षा दिवस का आयोजन

कृषि शिक्षा दिवस का आयोजन 17 दिसम्बंर, 2016 को किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि डॉ. एस. दाम राय, निदेशक, कैरी ने कृषि शिक्षा दिवस के उद्देश्य के बारे में बताते हुए बताया कि यह दिन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित किया जाता है। उन्होंने क्रांति के इंद्रधनुष के माध्यम से उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने में वैज्ञानिकों के योगदान का उल्लेख किया जिससे अनेक कृषि उत्पादों, जैसे दूध, गेहूं, मछली, तिलहन, एवं बागवानी फसलों की पैदावार में भारत शीर्ष तक पहुंच गया है। लाल बहादुर शास्त्री द्वारा दिए गए 'जय जवान–जय किसान' के नारे तथा द्वीप की एक महिला कृषक द्वारा दिए गए 'किसान नहीं तो देश नहीं' के नारे को इस अवसर पर दोहराया गया जो आजीविका के लिए कृषि के महत्व तथा राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में योगदान का उल्लेख करता है। उन्होंने आग्रह किया कि कृषि के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी के स्टार्ट–अप एवं डिजिटल इंडिया कार्यक्रमों के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु युवा शक्ति का उपयोग करें। उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी दिए।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, पशु विज्ञान, खेत फसल सुधार एवं संरक्षण, बागवानी एवं वानिकी प्रभागों के अध्यक्षों ने कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में उपलब्ध प्रति यूनिट क्षेत्र में उत्पादकता वृद्धि के लिए प्रौद्योगिकीय बैकस्टॉपिंग पर अपने विचारों को साझा किया। इस अवसर पर प्रगतिशील किसानों और छात्रों ने भी अपनी बात रक्खी और कहा कि पाठ्यक्रम में कृषि को एक विषय के रूप में सम्मिलित किया जाए। उन्होंने कहा कि कृषि द्वारा अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है, इससे विपत्तियों के दिनों में भी आजीविका के अवसर उपलब्ध् होते हैं, वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी की सहायता से उत्पोदन में वृद्धि होती है, हम अच्छे स्वास्थ्य एवं युवा शक्ति के उपयोग के लिए जैविक खेती की पद्धतियों को अपनाना चाहिए। इस कार्यक्रम में 90 लोगों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस का आयोजन

डॉ. हीरालाल चौधरी द्वारा प्रेरित कार्प प्रजनन के महत्वपूर्ण खोज को स्मरण करने हेतु कैरी के परिसर में राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस का आयोजन किया गया। डॉ. एस. दाम राय, निदेशक, कैरी ने उल्लेख किया कि माइनर कार्प सिरहिनस रेबा का बंध प्रजनन पहली बार 10 जुलाई, 1957 को डॉ. हीरालाल चौधरी द्वारा किया गया जिन्हें देश में प्रेरित प्रजनन का पिता कहा जाता है। द्वीप में किसानों को प्रोत्साहित करने तथा उनके कार्यों की सराहना के लिए श्री स्वर्ण सिंह एवं श्री संजित वैद्य को उत्कृष्ट मत्स्य पालक पुरस्कार तथा मत्स्य एव बीज उत्पादन के क्षेत्र में योगदान के लिए श्री आनोद चरण को 'प्रगतिशील मत्स्य पालक' पुरस्कार दिए गया ।

वार्षिक खेल पुरस्कातरों का वितरण

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर 29 अगस्त, 2016 को वार्षिक खेल पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. एस. दाम राय, निदेशक ने अपने संबोधन में प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के 111वें जन्मोत्सव के अवसर पर उनको स्मरण किया और पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट निष्पादन हेतु कार्मिकों तथा इनके परिवार के सदस्यों में पुरस्कारों का वितरण किया। श्री जे. रेमंड जॉनी एंजिल को वार्षिक खेल–2016 के 'बेस्ट एथलीट' पुरस्कार दिया गया।

कैरी के वैज्ञानिकों द्वारा भारत कि नई नस्ल के रूप में टेरेसा बकरी एवं निकोबारी शूकर की पहचान

टेरेसा बकरी (एक्सेशन संख्या : इंडिया_गोट_3300_टेरेसा_06025) एडल्ट फिमेल

पासपोर्ट इन्फॉनर्मेशन : यह एक बकरियों की देशी नस्ल है, जिसे निकोबारी जनजातीय किसानों ने चयनित प्रजनन के माध्यम से संभाल कर रखा है। टेरेसा, कार निकोबार एवं नानकौरी द्वीप के जनजातीय किसान ने इन शुद्ध देशी बकरियों को सभाल कर रखते है । इनकी कुल संख्या 7800 है। टेरेसा बकरियां लंबी, तगड़ी, भूरे या गहरे भूरे, काले या सफेद रंग में होती हैं और इनके शरीर पर सफेद या काले रंग के धब्बे होते हैं।

दोनों आंखों के भीतरी चक्षुकोण या आंखों के पलकों से एक विशेष सफेद पैच/लाइन निकलकर नाक या मुंह तक फैला हुआ होता है। डार्सल मिडलाइन पर पूंछ तक काले बाल होते हैं। इसके थूथन (मजल), आंखों के पलक तथा खुर

व्यस्क मादा

व्यस्क नर

काले रंग में होते हैं। इसकी ऊंचाई 24 से 27 इंच होती है। नर एवं मादा पशु के सिर की लम्बाई 8.86±0.10 तथा 7.5±0.27 इंच होती है। इसकी पूंछ मध्यम से लम्बी होती है। सींग फ्लैट बेस के साथ बड़े होते हैं। कान नीचे की ओर खड़े रहते हैं। टेरेसा बकरियों को इस द्वीपीय प्रदेश की शुद्ध देशी बकरी की नस्ल/जननद्रव्य माना जाता है। निकोबार द्वीप समूह के प्रत्येक जनजातीय परिवार में औसतन 6 टेरेसा बकरियों के समूह को पाला जाता है। पशु पालन एवं पशु चिकित्सा विभाग, अंडमान एवं निकोबार प्रशासन तथा कैरी, पोर्ट ब्लेयर टेरेसा बकरियों के शुद्ध जननद्रव्य का रखरखाव तथा वंश बढ़ाने का कार्य करता है।

निकोबारी शूकर (एक्सेशन न. इंडिया_पिग_3300_निकोबारी_09005)

पासपोर्ट इन्फॉकर्मेशन : निकोबारी शूकर, निकोबार द्वीप का देशी शूकर है और इसे निकोबारी जनजातीय लोगों द्वारा पुरातन काल से पाला जा रहा है। इनकी अनुमानित संख्याग लगभग 35000 है। ये शूकर मजबूत एवं लम्बो, कम ऊचाई वाले तथा लाल–भूरे, काले, ग्रे, ब्राउन, ब्ला किश ब्राउन रंग के होते हैं एवं इसकी त्वेचा का रंग हल्का पीला होता है । शूकर के पीठ पर मिड हेडध्भुजाओं से पूंछ के बेस तक चिन्हित खड़े शिखा होते हैं। चेहरे का प्रोफाइल सपाट से धनुषाकारी आकार का होता है। पीठ से नीचे वाला भाग हल्काइ सा नीचे की ओरध्वक्रता लिए हुए होता है। इसके जबड़े बड़े और गर्दन छोटी होती है। इसके पूंछ की विशेषता है कि यह मुड़ा हुआ नहीं होता है। ये तेजी से दौड़ते हैं।

व्यस्क नर

व्यस्क मादा

किस्म	फसल	सहयोगी
कैरी बैंगन–2	बैंगन	पी. के. सिंह, नरेश कुमार, आर. के. गौतम, कृष्ण कुमार, अजन्ता बिरह, के. शक्तिवेल, एस. के. जमीर अहमद एवं एस. दाम रॉय
कैरी मूंग 4	मूंग बीन	ए. के. सिंह, सुधीर तिरकी, पी. के. सिंह, आर. के. गौतम, नरेश कुमार, टी. पी. स्वर्णम, टी. सुब्रामणि, ए. वेलुमुर्गन, एस. के. जमीर अहमद एवं एस. दाम रॉय
कैरी मूंग 5	मूंग बीन	ए. के. सिंह, निरंजन रॉय, पी. के. सिंह, आर. के. गौतम, नरेश कुमार, टी. पी. स्वजर्णम, टी. सुब्रामणि, ए. वेलुमुर्गन, एस. के. जमीर अहमद एवं एस. दाम रॉय
कैरी उड़द 1	उड़द बीन	ए. के. सिंह, पी. के. सिंह, आर. के. गौतम, नरेश कुमार, टी. पी. स्वीर्णम, टी. सुब्रामणि, ए. वेलुमुर्गन, एस. के. जमीर अहमद एवं एस. दाम रॉय
कैरी उड़द 2	उड़द बीन	ए. के. सिंह, पी. के. सिंह, आर. के. गौतम, नरेश कुमार, टी. पी. स्वीर्णम, टी. सुब्रामणि, ए. वेलुमुर्गन, एस. के. जमीर अहमद एवं एस. दाम रॉय
कैरी खुम्ब 1 (क्रीम आयस्ट्र)	खुम्ब	के. शक्तिवेल, आर. के. गौतम, वी. के. पाण्डेय, अर्चना शर्मा, एन. सी. चौधरी, पी. के. सिंह, के. अभिरामी एवं एस. दाम रॉय
कैरी खुम्बी 2 (व्हाइट आयस्टर)	खुम्ब	के. शक्तिवेल, आर. के. गौतम, वी. के. पाण्डेय, एन. सी. चौधरी, पी. के. सिंह, ए. एस. कृष्णामूर्ति, एस. नक्कीरन, एस. के. जमीर अहमद, टी. सुब्रामणि एवं एस. दाम रॉय
कैरी खुम्ब 3 (ब्लू आयस्टर)	खुम्ब	के. शक्तिवेल, आर. के. गौतम, वी. के. पाण्डेय, एन. सी. चौधरी, ए. एस. कृष्णामूर्ति, एस. नक्कीरन, अर्चना शर्मा, एवं एस. दाम रॉय

द्वीप वासियों को फिश फीड मिल की सौगात

डॉ. एस. दाम राय, निदेशक द्वारा मैरीन रिसर्च लेबोरेट्री, पोर्ट ब्लेयर में 21 सितम्बर, 2016 को एक आधुनिक फिश फीड मिल का उद्घाटन किया गया। डॉ. एस. दाम राय ने अपने मुख्य अतिथीय भाषण में कैरी के मात्स्यिकी विज्ञान प्रभाग द्वारा फिश फीड मिल की स्थापना की पहल की सराहना की जिससे द्वीप में जलजीव पालन मे तेजी आएगी। उन्होंने इस विषय पर बल दिया कि प्रगतिशील मत्स्य पालकों को प्रशिक्षित किया जाए ताकि वे छोटे पैमाने पर अपने निजी फीड मिल स्थापित कर सकें। डॉ. टी. शिवरामकृष्णन, वैज्ञानिक ने फीड मिल की मौलिक सुविधाओं तथा इसके अनुप्रयोग के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया और सूचित किया कि इस वर्तमान सुविधा की उत्पादन क्षमता 20 कि.ग्रा. आहार प्रति घंटा है।

जलवायु परिवर्तन अनुकूलन एवं जैव–विविधता पर अंडमान साइंस एसोसिएशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

अंडमान साइंस एसोसिएशन, पोर्ट ब्लेयर द्वारा ''जलवायु परिवर्तन अनुकूलन एवं जैव–विविधता : पारिस्थितिकीय सततता एवं आजीविका सुरक्षा के लिए संसाधन प्रबंधन'' विषय पर चार प्रमुख प्रसंगों, जैसे ''जलवायु परिवर्तन एवं प्रभाव', ''जैव–विविधता में अनुकूली प्रबंधन'', ''अनुकूलन एवं आजीविका सुरक्षा'', ''द्वीपीय कृषि एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन'' तथा ''जलवायु परिवर्तन अनुकूलन के लिए देशज ज्ञान'' को ध्यान में रखकर 08–10 दिसंबर, 2016 तक गाराचरमा अनुसंधान परिसर में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन समारोह में संबोधन करते हुए प्रो. चाँद ने मानव जाति के अस्तित्व, से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की आवश्यकता का उल्लेख किया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन की आवश्यकता पर बल दिया जो प्रकृति में सम्मिलित है। उन्होंने विस्तृत रूप से यह बताया कि किस प्रकार सरकार जलवायु परिवर्तन एवं विकास के समाधान के लिए नीतियां तैयार कर रही है। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय कृषि की प्रगति को जलवायु परिवर्तन द्वारा चुनौती दी जा रही है। उन्होंने कहा की विभिन्न विषय क्षेत्रों में उपयुक्त हस्तक्षेपों की आवश्यकता है, जिससे सततता एवं आजीविका सुरक्षा की चुनौतियों विशेषकर घटते जैव–विविधता संसाधनों के संदर्भ में समाधान आवश्यक हैं। जलवायु परिवर्तन एक गंभीर पहलू है जिसका समाधान वर्तमान में आवश्यक है, अन्यथा देर हो जाएगी और इसके परिणामों से भविष्य खतरे में पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि जलवायु परितर्वन के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना, इसके परिणामों को समझना और समस्याओं के समाधान के लिए उपायों का प्रस्तुत करना आवश्यक है।

मुख्य अतिथि ने अनेक पुस्तकों का विमोचन किया जिनमें संगोष्ठी पर एक पुस्तक तथा इस अवसर पर स्मारिका भी सम्मिलित हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों को उनके अनुसंधान कार्य के लिए अंडमान साइंस अकेडमी द्वारा स्थापित विभिन्न पुरस्कारों के अलावा लाइफ टाइम एचिवमेंट अवार्ड और युवा वैज्ञानिक पुरस्कारों से सम्मानित किया ।

उद्घाटन सत्र में अन्य वक्ताओं ने भी जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर चिंता व्यक्त की और संसाधनों से समझौता किए बिना इस प्रभाव से निपटने के लिए अपने विचारों को प्रस्तुत किया। इन वक्ताओं में डॉ. ए. के. सिंह, उप–महानिदेशक (कृषि विस्तार एवं बागवानी विज्ञान), डॉ. आर. आर. हंसिलाल , अध्यक्ष, पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण तथा डॉ. आर. सी. अग्रवाल, रजिस्ट्रार जनरल, पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण तथा डॉ. एस. दाम रॉय, निदेशक, कैरी एवं अध्यक्ष, अंडमान साइंस एसोसिएशन सम्मिलित हैं।

इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न् भागों तथा यूएसए, कनाडा, स्वीडन, श्रीलंका, मॉरिशस, फिलीपैइन्स एवं जर्मनी के आठ विदेशी प्रतिभागियों सहित कुल 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में 396 सार सन्दर्भ, 96 पूर्ण लेख प्रस्तुत किये , जिन्हें 5 विषयों के अंदर वर्गीकृत किया गया, जैसे जलवायु परिवर्तन एवं प्रभाव, जैव–विविधता अनुकूल प्रबंधन, अनुकूलन एवं आजीविका सुरक्षा, द्वीपीय कृषि एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन हेतु आई.टी.के. पर विशेष सत्र प्रस्तुत हुए ।

डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव, कुलपति, राजेन्द्र केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार की अध्यक्षता में आयोजित उद्घाटन सत्र में तीन आमंत्रित थीम पेपर, नामत: प्रोफेसर गीतालक्ष्मी द्वारा जलवायु परिवर्तन : मॉडल्स, पूर्वानुमान एवं साक्ष्य, डॉ. एम. के. भट्टाचार्य द्वारा जलवायु अनुकूल फसलीय पौधों को उत्पन्न करने हेतु एडॉप्टेशन जेनेसेस की पहचान करने के प्रयास तथा डॉ. आर. आर. हंसिलाल द्वारा कृषि जैव–विविधता एवं आजीविका सुरक्षा विषयों पर लेख प्रस्तुत किए गए। सत्र में विभिन्नि संस्थानों और विषयों के प्रख्यात व्यक्तियों द्वारा 16 की–नोट तथा 14 लीड पेपर प्रस्तुत किए गए हैं और इनके अलावा 156 मौखिक तथा 87 पोस्टर भी प्रस्तुत किए गए।

''जलवायु परिवर्तन अनुकूलन के लिए देसी ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी'' विषय पर नीति निर्माताओं एवं किसानों की पारस्परिक चर्चा हेतु एक विशेष सत्र का आयोजन दिनांक 07 दिसंबर, 2016 को किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. ए. के. सिंह, उप–महानिदेशक (कृषि विस्तार एवं बागवानी विज्ञान), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने अपनी चर्चा को एक किसान के कथन ''किसान नहीं, तो देश नहीं'' से प्रारंभ करते हुए कहा जो लोग पालक समुदाय की बेहतरी के लिए कार्य करते हैं उनका यही नारा है। उन्होंने बड़ी संख्या में उत्पाद विशेष उद्यम, कस्टम हायरिंग सिस्टम तथा अंडमान निकोबार द्वीप में जलवायु अनुकूल गांवों को विकसित करने की इच्छा व्यक्त की और कहा कि इस कार्य में विकास विभाग तथा नाबार्ड को सम्मिलित किया जा सकता है।

10 दिसंबर, 2016 को समापन समारोह के दौरान सिफारिशों का एक मसौदा तैयार किया गया जिसे ''अंडमान घोषणा पत्र'' नाम दिया गया। डॉ. ए. के. सिंह तथा डॉ. ए. वेलमुर्गन, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आईसीसीवी 2016 के आयोजन सचिवों ने अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार के आयोजन हेतु समन्वायन का कार्य किया।

पुरस्कार एवं सम्मान

श्री सरकार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योंदय कृषि पुरस्कार

श्री अशोक कुमार सरकार ने समेकित पालन दृष्टिकोण को अपनाते हुए अपनी दक्षताओं का प्रदर्शन किया, उन्होंने बागवानी, खेत फसल, पशुधन एवं मात्स्यिकी क्षेत्रों का मिश्रित पालन अपने फार्म में किया। कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कैरी से प्रशिक्षण एवं तकनीकी सुझाव प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने सतत जैविक खेती के दृष्टिकोण को अपनाया। उन्होंने आईपीएम एवं आईएनएम को अपना कर नियमित रूप से गोबर की खाद का उपयोग करते हुए हरित खाद फसलों को उगाया और माइक्रोबियल कंर्सोटियम का उपयोग भी किया। वे वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन भी करते हैं, ऑफ सीजन सब्जियां नेट हाउस में उगाते हैं, फार्म अपशिष्टों के पुनर्चक्रण के नवोन्मेषी एवं समेकित दृष्टिकोण को भी अपनाते है तथा गैर–परंपरागत स्रोतों से फार्म में बने आहार का उत्पादन भी करते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने चौड़ी क्यारी एवं फर्रो प्रणाली, बहु–चरणीय फसल प्रणाली तथा निचले क्षेत्रों में मत्स्य उत्पादन को भी अपनाया है। वह मत्स्य बीजों, सब्जियों के बीजों, फलों के पौधों तथा खुम्ब् का उत्पादन कर किसानों को बेचते है। श्री अशोक कुमार सरकार, उत्तरी एवं मध्यक अंडमान जिले के ग्रामीण किसानों के लिए एक आदर्श उदाहरण तथा युवाओं के लिए सच्ची। दृढ़ता एवं कठोर परिश्रम से सफलता प्राप्तक करने हेतु रोल –मॉडल है।

श्री अशोक कुमार सरकार, उत्तरी एवं मध्य अंडमान जिले के गोविन्दपुर गांव के एक प्रगतिशील एवं नवोन्मेषी किसान हैं जिन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा पंडित दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार 25 सितंबर, 2016 को बी. डी. ऑडिटोरियम, सॉर्ट लेक, कलकत्ता में आयोजित एक समारोह में दिया गया जिसके अंतर्गत एक प्रमाण पत्र तथा 50,000/- रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाता है।

प्लांट जीनोम सेवियर कम्यूनिटी अवार्ड : पहली बार द्वीप के किसानों को करेन समुदाय को चावल हेतु

पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्तरी एवं मध्य अंडमान के करेन समुदाय को रु.10 लाख का प्लांमट जीनोम सेवियर कम्यूनिटी अवार्ड, साइटेशन एवं मोमेंटो दिया गया। यह पुरस्कार 21 दिसंबर, 2016 को बी. पी. पाल

ऑडिटोरियम, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा उत्तरी एवं मध्य अंडमान के मायाबंदर के करेन वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष रेव. सा सत्या को प्रदान किया गया। समुदाय को यह सम्मान परंपरागत एवं विशिष्ट चावल किस्मों नामत: खुशबुइया, ब्लैक बर्मा, व्हाइट बर्मा, रेड बर्मा, मुसले तथा न्या–इन इत्यादि को द्वीपों में सन 1925 से संरक्षण एवं परिरक्षण में योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

अंडमान एवं निकोबार द्वीपों में कृषि जैव–विविधता संरक्षण के लिए पालक समुदाय के योगदान के लिए दिया गया यह पीजीएससी पुरस्कार इस प्रकार का प्रथम पुरस्कार है। इस वैज्ञानिक कार्य का प्रमाणन डॉ. एस. दाम रॉय के मार्गदर्शन एवं समर्थन तथा इसकी वैज्ञानिक व्यवस्थात डॉ. आर. के. गौतम (प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष, खेत फसल सुधार एवं सरंक्षण प्रभाग), डॉ. पी. के. सिंह (प्रधान वैज्ञानिक, पादप प्रजनन) एवं डॉ. एस. के. जमीर अहमद (प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विस्तार), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय द्वपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर द्वारा की गई ।

निकोबारी जनजाति को निकोबारी आलू के लिए

डॉ. एम. शंकरन, डॉ. बी. दामोदरन, डॉ. एस. दाम रॉय, डॉ. टी. सुब्रमणी, डॉ. जेम्स जॉर्ज के एक वैज्ञानिक टीम ने कार निकोबार में एक क्रमबद्ध सर्वेक्षण किया। टीम ने कंद फसलों की विविधता एवं निकोबारी जनजातियों द्वारा इनके उपयोग का प्रलेखन किया। निकोबारी आलू का प्रलेख एवं विडियो क्लिप को वर्ष 2013 में पुरस्कार हेतु पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण को प्रस्तुत किया गया, तत्पश्चात वर्ष 2014 में एक संशोधित संस्करण पुन: प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात प्राधिकरण ने यथार्त की जांच के लिए एक समिति का गठन किया और यह जांच कार्य कृषि विज्ञान केन्द्र, कार निकोबार तथा कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा किया गया। प्रलेख समिति द्वारा प्रलेख एवं विडीयो फिल्म, की जांच के पश्चात पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण ने निकोबारी जनजातियों के योगदान हेतु ट्राइबल काउंसिल कार निकोबार को 10 लाख रुपयों का प्लांट जीनोम सेवियर कम्यूनिटी अवार्ड एवं साइटेशन देने पर विचार किया।

आईसीएआर–सीआईएआरआई को राष्ट्रीय कृषि उन्नति मेला–2017 में प्रशंसा पुरस्कार

आईसीएआर–सीआईएआरआई ने 15 से 17 मार्च, 2017 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित कृषि उन्नति मेला–2017 में एक स्टाल लगाकर अनुसंधान एवं विकासात्मक गतिविधियों तथा निवेशों को प्रदर्शित किया।

मेले का उद्घाटन श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान

कल्याण मंत्री जी ने किया। भारत के विभिन्न भागों से लगभग 350 सरकारी संगठन तथा 200 से अधिक निजी एवं अन्य संगठनों ने कृषि उन्नति मेला–2017 में अपने स्टाल लगाए। आईसीएआर–सीआईएआरआई, पोर्ट ब्लेयर ने मेले में अपने बैक्टीरियायी मुरझान रोग प्रतिरोधी बैंगन के किस्म सीएआरआई बैंगन–1 के 440 ग्रा. बीजों का विक्रय किया है तथा भारत के विभिन्न भागों से आए विजिटर्स एवं किसानों को संस्थान की प्रौद्योगिकियों तथा किस्मों (मसाले, नारियल, जिमीकंद, सुपारी, चावल, दलहन, नोनी, अदरक आदि) से अवगत कराया। सभी स्टालों में से लगभग 10 संगठनों के स्टालों को प्रशंसा पुरस्कार के लिए लघु सूची में रखा गया जिसमें कैरी, पोर्ट ब्लेयर भी सम्मिलित है।

आईसीएआर–सीआईएआरआई, पोर्ट ब्लेयर के स्टाल को कृषि प्रौद्योगिकियों की उत्कृष्ट प्रदर्शनी हेतु प्रशंसा पुरस्कार दिया गया जिसकी तैयारी डॉ. एस. दाम रॉय, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएआरआई के समग्र निर्देशन एवं मार्गदर्शन में की गई थी।

महत्वपूर्ण घटनाएं एवं विशिष्ट पदाधिकारियों का दौरा

- माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री गिरीराज सिंह, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार ने 29 दिसंबर, 2016 को दौरा किया और निदेशक एवं कार्मिकों से परिचर्चा की।

- 04 अप्रैल, 2016 को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना कार्यक्रम में माननीय संसद सदस्य श्री विष्णु पदा रे मुख्य अतिथि के रूप में पधारें।

- प्रो. रमेश चन्द, माननीय सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली; डॉ. ए. के. सिंह, उप–महानिदेशक (कृषि विस्तार एवं बागवानी विज्ञान), भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली; डॉ. आर. आर. हंसिलाल, अध्यक्ष, पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण; डॉ. आर. सी. अग्रवाल, रजिस्ट्रार जनरल, पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण एवं श्री एच. बी. सोनगडकर, महाप्रबंधक, नाबार्ड ने 07–10 दिसंबर, 2016 के दौरान जलवायु परिवर्तन पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, नीति निर्माताओं के मीट एवं अतिथिगृह के उद्घाटन के लिए दौरा किया।

- श्री अनिन्दो मजूमदार, भारतीय प्रशासनिक सेवा, मुख्य सचिव के साथ श्रीमती आर. मेनका, सचिव (कृषि, पशुपालन एवं पशुचिकित्सा तथा मात्स्यिकी), अंडमान एवं निकोबार प्रशासन ने 12 नवंबर, 2014 को दौरा किया और निदेशक एवं कार्मिकों से परिचर्चा की।
- डॉ. हर्ष कुमार बनवाला, अध्यक्ष, नाबार्ड ने 03 जनवरी, 2016 को दौरा किया और निदेशक तथा कार्मिकों से वैज्ञानिक परिचर्चा की।

आईसीएआर–सीआईएआरआई के पंख लक्षद्वीप तक फैले

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में कैरी द्वारा अपनी स्थापना से अब तक के चार दशकों में की गई प्रभावकारी प्रगति को देखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने लक्षद्वीप द्वीपों को कैरी, पोर्ट ब्लेयर के साथ जोड़ने का निर्णय लिया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में श्रंखलाबद्ध रूप से डॉ. एस.

दाम रॉय, निदेशक, कैरी, डॉ. बी. गंगाय्या, प्रभागाध्यक्ष, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन प्रभाग एवं नोडल अधिकारी और डॉ. एस. के. जमीर अहमद, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) एवं सहायक नोडल अधिकारी, लक्षद्वीप के दौरे किए हैं। पहली सफलता अप्रैल, 2016 में तब मिली जब किल्टन स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र को लक्षद्वीप प्रशासन से अपने हाथों में लेकर इसे वर्तमान समय में लक्षद्वीप की राजधानी कवरत्ती में लक्षद्वीप प्रशासन द्वारा दिए गए स्थान पर 08 अगस्त, 2016 को स्थानांतरित किया गया। 01 अप्रैल, 2017 से सीपीसीआरआई के प्रादेशिक स्टेशन को टेकओवर करते हुए मिनीकॉय में एक रिसर्च फार्म की स्थापना की जाएगी। अब तक जनजातीय उप–योजना के अंतर्गत लक्षद्वीप में तीन प्रशिक्षण कार्यक्रमो का आयोजन किया गया नामत: 01 सितंबर, 2016 को सब्जी उत्पादन, 05 मार्च, 2017 को पोषणिक रसोई बागान तथा 06 मार्च, 2017 को फील्ड एवं चारा संसाधनों में वृद्धि।

कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ डॉ. वी. एम. अब्दुल गफ्फूर को प्रभारी अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र तथा प्रभारी अधिकारी, मिनीकॉय केन्द्र का दोहरा दायित्व दिया गया।

निदेशक के कलम से

भारतीय कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में द्वीपीय परितंत्र की अनुसंधान आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विस्तारित अधिदेश के निष्पादन में कैरी ने अपनी गतिविधियों को लक्षद्वीप द्वीप समूह तक फैलाया जो वर्ष के दौरान एक बड़ी उपलब्धि है।

संस्थान को वैश्विक पटल पर रखने हेतु संस्थांन के वैज्ञानिकों ने विशिष्ट गतिविधियों को प्रारम्भ किया जैसे निकोबारी द्वीप समूह की टेरेसा बकरी और निकोबारी शूकर को राष्ट्रीय पशु आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, भा.कृ.अनु.प. करनाल, हरियाणा द्वारा इन्हें भारत की नई नस्ल के रूप में मान्यता देना। इसके अतिरिक्तव पौध किस्म संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण द्वारा 10 लाख रूपयों के दो प्लांट जीनोम सेवियर कम्यूनिटी पुरस्कार द्वीप के कृषक समुदायों जैसे करेन समुदाय तथा निकोबारी जनजातीय समुदाय को परम्पागत एवं विशिष्ट चावल किस्मों तथा निकोबारी आलू के संरक्षण एवं परिरक्षण में उनके योगदान के लिए दिया गया।

आपसे यह साझा करते हुए गर्व महसूस करता हूं कि कृषि विज्ञान केन्द्र तथा कैरी के समर्थन से कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में जमीनी स्तर पर जैविक रूप से प्रौद्योगिकीय बैकस्टॉपिंग को सफलतापूर्वक अपनाने पर, श्री अशोक कुमार सरकार, उत्तरी एवं मध्य अंडमान के एक प्रगतिशील किसान को अटारी, जोन–II, कोलकाता द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ए.आई.सी.आर.आई.पी. आई.एफ.एस. टीम को राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2014–15 के लिए दक्षिणी एवं निकोबार जिले में किए गए सराहनीय कार्यों हेतु उत्कृष्टा केन्द्र घोषित किया गया। पणधारियों विशेषकर किसानों के मांग पर आठ फसल किस्मों नामत: मूंग और उड़द में दो–दो किस्में, बैंगन के एक किस्म तथा खुम्ब के तीन किस्मों को आई.वी.आर.सी. द्वारा जारी किया गया।

जलवायु परिवर्तन–अनुकूलन एवं जैवविविधता पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का कुशल आयोजन प्रतिभागी एवं प्रतिनिधियों के लिए वास्तविकता का दर्पण है। टीम द्वारा किया गया विलक्षण कार्य और तार्किक समापन सफलता का सूचक हैं।

माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री गिरीराज सिंह, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार का दौरा एक अति महत्वपूर्ण घटना है। माननीय संसद सदस्य श्री बिष्णु पदा रे, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। प्रो. रमेश चन्द, माननीय सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली; डॉ. ए. के. सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि विस्तार एवं बागवानी विज्ञान), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली; डॉ. आर. आर. हंसिलाल, अध्यक्ष, पौध किस्मा संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण, डॉ. आर. सी. अग्रवाल, रजिस्ट्रार जनरल, पौध किस्मा संरक्षण एवं किसान अधिकार प्राधिकरण जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, पॉलसी मेकर्स मीट एवं अतिथि गृह के उद्घाटन हेतु संस्थान का दौरा किया। श्री अनिन्दो् मजुमदार, भा.प्र.से., मुख्यह सचिव के साथ श्रीमती आर. मेनका, सचिव (कृषि, पशु पालन एवं पशु चिकित्साय तथा मात्स्यिकी) ने 12 नवम्बर, 2016 को तथा डॉ. हर्ष कुमार बनवाला, अध्यक्ष, नबार्ड ने 03 जनवरी, 2017 को निदेशक तथा कार्मिकों से चर्चा हेतु संस्थान का दौरा किया।

अंत में, मैं प्रत्येनक व्यक्ति को बधाई देता हूं जिन्होंने द्वीप के किसानों को आजिविका उपलब्ध कराने एवं अतिरिक्त खाद्य फसलों तथा पशु उत्पादों में सतता प्राप्त करने हेतु आम हितों के क्षेत्र में एकजुट हो कर कार्य किए हैं।

शिवनारायण दाम रॉय
निदेशक, आईसीएआर–सीआईएआरआई

प्रकाशक	: डॉ. एस. दाम रॉय, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएआरआई, पोर्ट ब्लेयर
संकलन एवं संपादन	: डॉ. एस. के. जमीर अहमद, श्री अमित श्रीवास्तव एवं श्रीमती रीना साहा
कम्यू टर सहायता	: श्रीमती रीना साहा
फोटो	: श्री के. अली अकबर
मुद्रक	: श्री विगनेश प्रिंट्स, पुराना नम्बर 33 (नया नम्ब र 65) दूसरी स्ट्रीट, पुदुर, अशोक नगर, चेन्नई – 600 083 ईमेल : vprintschennai1@gmail-com

भाकृअनुप ICAR

CIARI ICAR तमसो मा ज्योतिर्गमय